हिन्दुस्तान टाइम्स के फोटोग्राफर हिमांशु व्यास एक बार अपने शहर जोधपुर गए। उनके एक मित्र ने उन्हें पास के एक बिश्नोई गाँव का किस्सा बताया कि बिना माँ-बाप का एक हिरण का बच्चा दूध पीने एक महिला के पास जाता है।

अगली ही सुबह वे उस गाँव में गए। हिरण का बच्चा उस महिला के बच्चों के साथ खेल रहा था। जब भूख लगती तो वह अपनी माँ के पास जाकर उसे छूकर दूध माँगता। माँ काम-काज छोड़ हिरण के बच्चे और अपनी बेटी को एक साथ दूध पिला देती।

बेस्ट फोटोग्राफ ऑफ द इयर

हिमांशु व्यास लिखते हैं: लोग दुनिया भर में जंगली-जीवों की रक्षा करने के बारे में बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। लेकिन मैं अपने सामने बैठी इस माँ को एकटक देखता चला जा रहा था। वो इतनी खामोशी से मनुष्य जाति को प्रकृति के साथ फिर से जोड़ रही थी। मैं उस महिला के प्रति इतनी श्रद्धा से भर गया कि भूल ही गया कि मुझे तस्वीर खींचनी है।

बत्तख के सूप का सूप

नसरुद्दीन के घर उनके एक रिश्तेदार आए। साथ में बत्तख लेते आए। सोचा था पका कर खाएँगे। पर यह क्या! मुल्ला जी के घर मेहमानों का ताँता लग गया। सभी कहते, "हम आपके दोस्त के दोस्त हैं जो आपके लिए बत्तख लाए हैं।" हरेक की इच्छा होती कि उन्हें भी खाना-वाना खिलाया जाए। मुल्ला जी ने लोगों की आवभगत की। फिर एक व्यक्ति आया और बोला, "जिसने आपको यह बत्तख दी है मैं उसके रिश्तेदार के दोस्त का दोस्त हूँ।" ज़ाहिर है वह भी खाने के लिए बैठ गया। मुल्ला नसरुद्दीन ने गरम पानी का एक कटोरा उनके सामने रख दिया। "यह क्या है?" मेहमान चौंका।

"यह, उस बतख के सूप का सूप है जो तुम्हारे दोस्त के दोस्त का रिश्तेदार लाया था।" मुल्लाजी बोले।

पहेलियाँ

ईंट है, पर नहीं मकान,
इक्के हैं, नहीं कोचवान,
बिना तमोली छितरे पान,
राजा-रानी, ना दरबान।

आधा धुप्पा, आधी छइयाँ।
जो समझे, चालाक है भइया।

एक मुट्ठी राई, रात भर छिटाई,
गिनते-गिनते थक गए, तो भी छोर न पाई।